अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

सामायिक से करें धर्म की कमाई: महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण

-अनित्य संसार में आत्मा को निर्मल बनाने का आचार्यश्री ने प्रशस्त किया पथ

-लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे नंगिरकुलंगरा

-टी.के.माधव मेमोरियल कॉलेज परिसर ज्योतिचरण से हुआ पावन

09.03.2019 नंगिरकुलंगरा, अलप्पुझा (केरल): केरल राज्य में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के मंगल संदेशों के साथ गतिमान जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी धवल सेना के साथ नलुचिरा गांव स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल से मंगल प्रस्थान किया। गत दो दिनों से अरब सागर के किनारे-किनारे गतिमान आचार्यश्री आज जैसे ही प्रवास स्थल से बाहर निकले कि सामने ही पम्पा नदी पर बना पुल श्रीचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। यह नदी यहीं अरब सागर में समाहित हो रही थी। आचार्यश्री के पुल पर पधारे तो एक ओर लहराता अथाह जलराशि का समुद्र तो दूसरी ओर निरंतर प्रवाहित होने वाली नदी और उनके ऊपर से गुजरते अध्यात्म जगत के महासागर की उपस्थिति ऐसी लग रही थी मानों यहां त्रिवेणी का संगम स्थल हो गया। आचार्यश्री पुल को पार कर लगभग तेरह किलोमीटर का विहार परिसम्पन्न कर नंगिरकुलंगरा स्थित टी.के. माधव मेमोरियल कॉलेज परिसर में पधारे।

कॉलेज परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम के दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा यह जीवन कब समाप्त हो जाए यह कहा नहीं जा सकता। मृत्यु का कोई भरोसा नहीं होता। मृत्यु कब आकस्मिक रूप में आ जाती है, किसी को पता भी नहीं चल पाता। इसलिए मनुष्य के जीवन को पके हुए पान के पत्ते के समान बताया गया है। पका हुआ पत्ता कभी भी पेड़ गिर सकता है, उसी प्रकार जीवन कभी भी समाप्त हो सकता है। इस अनित्यता की स्थिति में आदमी को घमंड में नहीं जाना चाहिए। जो राज्य, पद, धन, वैभव, परिजन आदि सब एक दिन छूट जाता है, चला जाता है। मृत्यु के पश्चात् आत्मा के साथ कुछ नहीं जाता। आत्मा के साथ कृत पाप-पुण्य ही जाते हैं। इसलिए आदमी को ज्यादा, धन, एश्वर्य की प्राप्ति के लिए नहीं, आत्मा के कल्याण के लिए, उसकी निर्मलता का प्रयास करना चाहिए। आत्मा की निर्मलता के लिए आदमी को धर्म, ध्यान, साधना, तपस्या आदि सत्कर्म करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को बुरे कार्यों से बचते हुए अपनी आत्मा को निर्मल बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को सौभाग्य से प्राप्त इस मानव तन का अच्छा लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। शांति, सादगी, संयम और नशामुक्तता जीवन में रहे। धर्माचरण का प्रयास हो तो आत्मा निर्मल बन सकती है।

शनिवार होने के कारण आचार्यश्री ने समुपस्थित श्रद्धालुओं को विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि धर्म की कमाई का एक अच्छा माध्यम सामायिक का है। तेरापंथी श्रावक समाज प्रयास करे कि शनिवार को सायं सात से आठ बजे के बीच सामायिक करने का प्रयास करे। इससे आत्मा के निर्मलीकरण में सहयोग प्राप्त हो सकता है। आदमी को तपस्या, साधना और परकल्याण की तेजस्वितामय जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

कॉलेज की व्यवस्थाओं से जुड़ी श्रीमती अनिता मैडम ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी तो आचार्यश्री ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की।